ओमशान्ति। भगवानुवाच:- बच्चे जानते हैं कि बाप वही राजयोग सीखा रहे हैं जो 5000 वर्ष पहले सिखलाया था। बच्चों को मालूम है। दुनिया को तो मालूम नहीं। तो फिर पूछना चाहिए गीता का भगवान कब आया था, भगवान जो कहते हैं मैं तुमको राजयोग सीखा कर राजाओं का राजा बनाता हूं। वह गीता का एपीसुड कब हुआ था। पूछना चाहिए ना। यह बात कोई भी नहीं जानते। तुम अभी प्रेक्टीकल में सुन रहे हो। गीता का एपीसुड होना भी चाहिए कलियुग अन्त और सतयुग आदि के बीच में। आदी सनातन देवी देवता धर्म की स्थापना करते हैं तो जरूर संगम पर ही आवेंगे। पुरुषोत्तम संगम युग है जरूर। भल पुरुषोत्तम वर्ष गाते हैं परन्तु विचारों को पता नहीं है। तुम मीठे2 बच्चों को मालूम है। उत्तम पुरुष बनने लिए अर्थात मनुष्य को उत्तम देवता बनाने लिए बाप आकर पढ़ाते हैं। मनुष्यों में उत्तम पुरुष यह (ल0ना0) देवताएं ही हैं ना। मनुष्य से देवता किये... यह तो हुआ पुरुषोत्तम संगम। देवताएं तो जरूर सतयुग में ही आते हैं। बाकी सभी मनुष्य कलियुग में हैं। तुम बच्चे जानते हो हम हैं संगम युगी ब्राह्मण। यह तो सबको2 याद करना है। नहीं तो कुल किसको भी भूलता नहीं है। परन्तु यहां माया यह भी भूला देती है। हम ब्राह्मण कुल के हैं फिर देवता कुल के बनते हैं। बहुतों को माया भूला देती है। अगर यह याद रहे तो चोटी भी याद रहे। खुशी रहे। तुम पढ़ते भी हो राजयोग। समझाते हो अभी फिर से भगवान गीता का ज्ञान जिसको भारत का प्राचीन राजयोग कहा जाता है वह सुना रहे हैं। मनुष्य से देवता बना रहे हैं। बाप ने कहा काम महाशत्रु है, इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। कल कलकत्ते से समाचार आया पवित्रता पर बात पर डिबेट करने लगे। बच्ची ने लिखा कैसे2 मनुष्य मिलते हैं। मनुष्यों के लिए विकार तो जैसे खुजाना भक्ति। बाप से यह वर्सा मिला हुआ है। बालग बनते हैं तो पहले2 यह वर्सा मिलता है बाद का। शादी बरबादी छोड़ते हैं। बाप कहते हैं काम महाशत्रु है। तो जरूर काम को जीतने से ही जगत जीत बनेंगे। जरूर बाप संगम युग पर ही आये होंगे। महाभारत महाभारी लड़ाई भी है।। हम भी यहां हाजिर हैं। ऐसे भी नहीं है सभी से काम पर विजय पहन लेते हैं। नहीं देरी लगती है। मुख्यवस्तु बात तो यह ही लिखते हैं कि बाबा गिर गये। विषय सागर नदी में गिर गये तो जरूर कोई आर्डीनेन्स है ना। बाप का परमान है काम को जीतने से जगत जीत बनेंगे। ऐसे नहीं कि जगत जीत बनकर फिर विकार में जाते होंगे। जगत जीत यह (ल0ना0) हैं ना। इनको कहा जाता है है सम्पूर्ण निर्विकारी। देवताओं को सभी निर्विकारी ही कहते हैं। देवता हैं ही निर्विकारी। जिसको तुम रामराज्य कहते हो। वह दुनिया ही है वायसलेस। यह है विषस दुनिया। अपवित्र गृहस्थ आश्रम। बाप ने समझाया है तुम पवित्र गृहस्थ आश्रम के थे। अभी 84 जन्म लेते2 अपवित्र हो। 84 जन्मों का कहानी है ना। नई दुनिया जरूर वायसलेस होना चाहिए। भगवान पवित्रता का सागर है। स्थापना करते हैं। फिर रावण राज्य भी जरूर आना है। नाम ही है रामराज्य और रावण राज्य। रावण राज्य आसुरी राज्य। अभी तुम आसुरी राज्य में बैठे हो। यह है देवी राज्य की निशानी। बाबा ने कहा था प्रभात फेरी निकालो। प्रभात फेरी सवेरे को कहा जाता है। उस समय तो मनुष्य सोये हुये रहते इसलिए देरी से निकालते हैं। क्योंकि मनुष्य काम विकार में थक2 कर सो जाते हैं। थकावट इन में होती है कि क्रोध में। प्रदर्शनी भी अच्छी तब हो जब सेन्टर भी हो जहां जाकर समझे। भगवानुवाच काममहाशत्रु इन पर जीत पाने से तुम जगत जीत बनेंगे। यह ल0ना0 का चित्र साथ में जरूर होना चाहिए। ट्रन्सलाईट भूलना न चाहिए। ट्रन्सलाईट का चित्र हो सकता है। बेटरी आद का प्रबन्ध रख सकते हैं। एक यह और छोटी। ट्रक में जैसे पूजा में देवियों को निकालते हैं हैं ना। तुम भी दो तीन ट्रक्स निकालो। जिसमें चित्र दिखाते और समझाते रहो। दिन प्रति दिन बुद्धि भी बुद्धि होती जाती है। तुम्हारा ज्ञान बुद्धि बढ़ता जाता है। नये2 चित्र निकलते रहते हैं। बच्चे बनते हैं सभी चित्र ट्रन्सलाईट के खाते भभका होता है।

खर्चा का हर्जा नहीं है। क्यों कि बच्चों की वृद्धि होती रहती है। उसमें भी गरीब साधारण शाहुकार सभी आ
शिव बाबा का भण्डारा रहता है। जो भण्डारा भरते हैं उनको वहां करोड़ों मिल जाता है। तब तो बाप
हैं मीठे2 बच्चों पदमापदम रिपति बनने वाले। सो भी 21 जन्मों के लिए। बाप खुद कहते हैं तुमजगत
मालिक बन जावेंगे। 21 पीढ़ी। मैं खुद डायरेक्ट आया हूं। तुम्हारे तिरी पर बहिस्त लेआया हूं। जैसे बच्चा
होता है और बाप का वर्सा उनके तिरी पर है ही। बाप कहेंगे यह परवार आद सभी तुम्हारे हैं। यह बे
का बाप भी कहते हैं तुम मेरे बनते हो तो स्वर्ग की बादशाही तुम्हारे लिए है 21 पीढ़ी। क्यों कि तुम
पर जीत पाते हो। इसलिए बाप को काल महाकाल कहते हैं। महाकाल कोई मारने वाला नहीं है। उनकी
तो महिमा की जाती है। समझते हैं भगवान ने यमदूत भेज कर गंगा दिलाया। ऐसी कोई बात
है नहीं। यहसभी हैं भक्ति मार्ग की बातें। बाप कहते हैं मैं कालों का काल हूं। पहाड़ी लोग महाकाल को
भी बहुत मानते हैं। महाकाल का मंदिर नहीं बनाते हैं। ऐसे ही झुन्डिया लगा देते हैं। तो बाप बैठ ब
को समझते हैं। यह भी समझते हो यह तो राईट बात है। बाप को याद करने से ही जन्म जन्मान्तर के वि
विनाश होते हैं। तो इसका प्रचार करना चाहिए। कुम्भ के मेले आद तो बहुत ही लगते हैं। स्नान करने
काभी बहुत महत्व बताया है। अभी तुम बच्चों को यह ज्ञान अमृत हर 5000 वर्ष बाद मिलता है। वास्तव
इसका अमृत नाम है नहीं। यह तो पढ़ाई है ना। बाकी यह सभी भक्ति मार्ग के नाम हैं। जो बाप बैठ
समझाते हैं। अमृत नाम सुन कर चित्रों में पानी आद दिखाया है। वास्तव में पढ़ाई को अमृत नहीं कहा ज
सकता। बाप कहते हैं मैं तुमको राज योग पढ़ाता हूं। पढ़ाई से तो उंच पद मिलता है। सो भी मैं पढ़ाता
भगवान को कोई ऐसा शुद्धार हुआ रूप तो नहीं है। यह तो बाप आकर इन में पढ़ाते हैं। ऐसे नहीं कि प
कर आप समान भगवान-भगवती बनावेंगे। आप समान आत्माओं को बनाते हैं। खुद ल०ना० थोड़े ही है।
जो आप समान बनावेंगे। आत्मा पढ़ता है। उनको आप समान पवित्र नालेज-फुलबनाते हैं। ऐसे नहीं कि भगा
भगवती बनाते हैं। उन्हों ने कृष्ण को दिखाया है। वह कैसे पढ़ावेंगे। सतयुग में पतित थोड़े ही होते हैं।
कृष्ण तो होता ही है सतयुग में। और कब भी कृष्ण को तुम नहीं देखेंगे। ड्रामा में हर एक का पुनर्जन्म का
चित्र न्यारा रहता है। कुदरत का ड्रामा है ना। कितना समझने का है। क्यों कि यह बनी बनाई बन रही है।
बाप भी कहते हैं तुम हू बहू इसी फिचर्स में इसी कपड़े में कल्प2 तुम ही पढ़ने आवेंगे। हू बहू
रिपीट होता है ना। आत्मा एक शरीर छोड़ दूसरा फिर वही लेती है जो कल्प पहले लिया था। ड्रामा में कुछ भी
फर्क हो नहीं सकता। वह होती है हद की बात। यह है बेहद की बात। सिवाय बेहद के बाप के और को
समझा न सके। इसमें कुछ भी संशय नहीं होना चाहिए। निश्चय बुधि हो जाते फिर कोई न कोई संशय
आ जाते। संग लग जाता है। ईश्वरीय संग चलता चला तो बेरा पार हो जावेंगा। संग छोड़ा तो विषय सागर
में डूब पड़ेंगा। एक तरफ है क्षीर सागर, दूसरे तरफ है विषय सागर। क्षीरसागर को छोड़ा तो विषयसागर
में गिर पड़ेंगे। शज़हर या अमृत। ज्ञानामृत भी कहते हैं। बाप है ज्ञान का सागर। उनकी महिमा भी है। उनकी
जो महिमा है वह ल०ना० को नहीं दे सकते। कृष्ण कोई ज्ञान का सागर थोड़े ही हैं। बाप है पवित्रता का
सागर। भल वह ल०ना० पवित्र बनते हैं पर वरन्तु हमेशा के लिए थोड़े ही रहते हैं। फिर भी आधा कल्प
गिरते तो हैं ना। सन्यासी तो जन्म व जन्म गिरते हैं। उन्हों के लिए तो रावण राज्य ही है। जन्म तो फिर
भी विख से ही लेते हैं। पतित तो बनते हैं ना। तो यह सभी बातें कोई मनुष्य मात्र नहीं जानते। वर्ण
कोई नहीं जानते। बाप कहते हैं मैं आकर सभी की सदगति करता हूं। सदगति दाता मैं एक ही हूं। तुम
सदगति में जाते हो फिर वहां यह बातें नहीं होती। अभी तुम बच्चे सम्मुख बैठे हो। बड़े स्कूल में। तुमभी
शिव बाबा से पढ़ कर टीचर बनते होना। मुख्य प्रिन्पाल है वह। आते भी उनके पास ही हैं। कहते हैं हम

आते हैं शिव बाबा के पास। अरे वह तो निकराकार है। हां वह आते हैं इनके तन में। इसलिए कहते हैं बाबादादा पास जाते हैं। यह बाबा है उनका रथ। जिस पर उनकी सवारी है। उनको रथ, घोड़ा, अश्व भी कहा जाता है। इन पर एक कथा भी है। दक्षप्रजापिता ने यज्ञ रचा था। शास्त्रों में तो अनेक कहानियां लिखदी हैं। बाप कहते हैं अभी यह सभी बातें भूल जाओ। शास्त्रों में बहुत ही कचड़ा लिखा हुआ है। सबसे जास्ती कचड़े की बात लिखी हुई है कण-कण में, ठिक्कर-भित्तर में परमात्मा है। ऐसी बातें कब न सुनो। बोलो भगवान ने कहा है हियर नो ईविल। तुम भगवान की बैठ ग्लानी करते हो। अपन से भी उनको नीचे गिरा दिया है। अजामिज जैसे पापात्माओं ने उनको भगवान को अपने से भी नीचे गिरा दिया है। बोलो हम यह नहीं सुन सकते हैं। शिव बाबा की इतनी ग्लानी। जो सब का सदगति दाता, उनको ठिक्कर-भित्तर में डाल दिया है। इन जैसा महान पापात्मा कोई होता नहीं। शिव भगवानुवाच है कह दो। भगवान भी कहते हैं मैं आता जब जब भारत में अति धर्म की ग्लानी होती है। गीतावादी भल कहते हैं यदा यदाहि... परन्तु अर्थ नहीं करते। समझते। भगवान की ग्लानी क्या होती है कुछ भी समझते नहीं हैं। कितना पत्थर बुधि हैं। यह भी समझते हो तुम्हारा बहुत ही छोटा झाड़ है। उनको तुफान आ लगते हैं। नया झाड़ है ना। फाउन्डेशन तो है यह। इतने सभी अनेक धर्मों के बीच में एकआदी सनातन देवी देवता धर्म का सैपलिंग रख लगाते हैं। कितनी मेहनत है। औरों को मेहनत नहीं लगती। वह तो ऊपर से आते रहते हैं। यहां तो जो सतयुग त्रेता में आने वाले हैं उन्हों की ही आत्माएं बैठ पढ़ती है। जो पतित है व उन्हों को पावन बनाने लिए ही बैठ पढ़ाते हैं। गीता तो यह भी बहुत पढ़ते थे। तुम बच्चों में ऐसा कोई नहीं होगा। सब से जास्ती गीता बाबा ने पढ़ी है। ट्रेन में जाता था तो भी गीता पढ़ता था। जैसे अभी आत्माओं को याद कर दृष्टि देते हैं तो पाप कट जाये। भक्ति मार्ग में फिर गीता के आगे जल रख बैठ पढ़ते हैं समझते हैं फिर पितरों का उधार होगा। इसलिए पितरों को बैठ याद करते हैं। अभी तो बाप ने प्रवेश किया तो उस गीता को ही छोड़ दिया। अरे यह तो झूठी गीता है। भक्ति में तो गीता का बहुत मान रखता था। चन्दन आदि लगाते थे। बाबा कोई कम भक्त नहीं था। रामायण आद भी पढ़ते थे। अक्सर कर के बूढ़े लोग आते थे। जो बड़ा था सुनाने वाला उसकी तबीयत ठीक नहीं होती थी तो हमको कहते थे तुम बैठ पढ़ो। बहुत खुशी खुशी होती थी। अभी तो वह सभी पास्ट हो गया। बाप कहते हैं बीती को चितवो नहीं। यह शास्त्र आद तो ढेर पढ़ी। अभी बाबा ने कहा है यह भूसा निकाल दो। यह जो भी तुम्हारे गुरु आद हैं उन सभी को भगाओ। इन साधुओं आकर आद भी धक्का उधार मुझे करना है। तो वह फिरतेरा उधार कैसे होगा। बाप ने स्थापना विनाश और राजधानी का साथ कराया तो वह पक्का होगया। यह सभी खलास होना है। कब यह थोड़े ही जाना था। बाबा ने कहा अभी यह सभी होगा। देरी थोड़े ही है। हम फलाना राजा बनूंगा। यह होगा पता नहीं था। जानता था। यह तो तुम बच्चे जानते हो बाबा की प्रवेशता कैसे हुई। यह बातें तो मनुष्य नहीं जानते। त्रिमूर्ति ब्रह्मा विष्णु शंकर का नाम तो लेते हैं परन्तु इन तीनों में से भगवान किसमें प्रवेश करेंगे यह थोड़े ही जानते हैं। वह लोग तो विष्णु के नाम लेते हैं। विष्णु तो है देवता। वह कोई मनुष्य थोड़े ही है जो पढ़ावेंगे। शंकर को दिखाते हैं विनाशकारी। बाकी कौन पढ़ावेंगे। बाप कहते हैं मैं इन में प्रवेश करता हूं। इसलिए दिखाया है ब्रह्मा द्वारा स्थापना। वह पालना और वह विनाश। इसमें बुधि से समझने की बातें हैं। भगवानुवाच मैं तुमको राजयोग सिखाता हूं। वह भगवान कब आया जो राजयोग सिखाया और बाबा पद दिलाया यह अभी तुम समझते हो। 84 जन्मों का राज़ भी समझाया। पूज्य पुजारी का भी अर्थ समझाया। विश्व में शान्ति का राज्य यह (ल०ना०) था ना। जो भारतवासी अथवा सारी दुनिया चाहती है। विश्व में शान्ति का राज्य था। तो जरूर बाकी सभी शान्तिधाम में थे। बाकी सभी धर्मशान्तिधाम में रहते हैं। अभी हम

श्रीमत पर यहकार्य कर रहे हैं। अनेक बार किया है और करते रहेंगे। यहतो बाप जानते हैं कोटो में कोई निकलेंगे। इस देवी देवता धर्म वालों को होटच होगा। भाग्य की ही बात है। जो इस कुल के होंगे वह निकल रहे हैं। निकलते रहेंगे। जैसे तुम निकले हो वैसे और भी प्रजा आद बनते रहेंगे। जो अच्छा पढ़ते हैं वह पद भी अच्छा पाते हैं। बाबापूछते हैं विजय माला में याप्रजा माला में जाना है। माला तो सभी की बनती है। प्रजा की भी माला है नम्बरवापुरुषार्थ अनुसार आवेंगे। ऐसे भी नहीं ढेर के ढेर आजाते इन में तो शाहुकार, साधारण गरीब आद सभी हैं ना। राजधानी में तो इकट्ठा सभी शाहुकार प्रजा साधारण आद सभी होते हैं। जो पूछते हो क्या बनने चाहते हो। मुख्य है ही ज्ञान और योग की बात। योग बिन ज्ञान कैसे निकलेगा। बैटरी के साथ योग जरूर चाहिए। योग है मुख्य। योगसे ही विकर्म विनाश होते हैं। मूल है यह। इसलिए बाप कहते हैं याद रखते रहो। बाकी पढ़ाई तो सहज है। बड़ी एकदम हैल्दी-बड़ी आयु इस योग से भोगेंगे। विकर्म विनाश होंगे। तब ही पास विथ आनर होंगे। नहीं तो मौचरा ढ़क आकर भाग जा लेंगे। जो मौचरा नहीं आवेंगे तो बहुत मानी मिलेगी। आनरेबुल हो गया ना। राम ने भी मौचरा खाया होगा। पढ़े आगे आनपढ़े जरूर भरी टेको हैं।

तो बाप कहते हैं मीठे2 बच्चे एक तो मुझे याद करो तो तुम पावन बन जावेंगे। और को उपाय है नहीं। तुम हो तो वो कोई उपाय है ? यह योग ही अग्नि है जिस से पाप भस्म होते हैं। बाबा गंगा सागर का स्नान तो बहुत किया। सागर में भी बहुत रबीशीन्ट हो जाते हैं। इनोसेन्ट कोई बीच में आ जाते हैं तो झट लहर ले जाती है फिर पटके खाने लग पड़ते हैं। बाबा का अनुभव है। पांव खिसक गया तो खलास। इसमें भी कितने का पैर खिसक जाता है। तो गटर में जाकर डूबते हैं। बाबा की शुरू में बहुत कड़ी भुल्लो चलती थी कि कामकटारू है इन पर जीत पानी है। जैसे यह गटर साफ करने वाले सफाई करने जाते हैं अन्दर। तुमको भी यह चाहिए तो माया मुड़ाफ गटर में घुस जाओ। बाबा साफ कहते हैं। बाप इन की पैदायश क्यों बनते। न खुद अमृत पीते हो न पीने देते हो। बाबा कुछ भी कहते थे, कोई सिखते नहीं थे। बाबा की भुल्ली पर कोई रहम गुस्सा लगता नहीं था। यहभी मिशाल देता था सिंह क्या जाने इस को, जिसकी बोली में, सारे मंडल के साथ ले साड़े क्या समझे। कभी भी कोईबिगड़ता नहीं था। सभी बिगड़ें अ इस बिचार की बात पर। यह भी ड्रामा की भावी कहेंगे। फिर भी ऐसे ही होगा। यह भी लिखा हुआ है लाजा भवन को आग लगाई। यहसभी तुम ने देखा। बासलेट आद ले आये थे। फिर पुलिस आद को बुलाना पड़ा। बाबा नहीं था उस समय। बाप रात को निकल जाते थे। जैसे तुम भागे। किसको भी पता नहीं पड़ा। बाप भी चला जाता था। किसको पता नहीं पड़ता था। यहसभी ड्रामा में नूंध थी। ड्रामा बड़ा ताकत वाला था। मनुष्य में क्या ताकत।

आगे चल कर तुमको सभी सा० होंगे। घर में नजदीक आते जावेंगे। सेम्पल देखेंगे। ऐसे थोड़े ही ममी का देखेंगे। इसलिए बाबा कहते हैं भूलो नहीं। यहां जैसे योग में बैठे हो बाहर जाने से बात ही न्यारे हो जाता है। सारा दिन गोरखधंधे में लग जाते हैं। यहां आते हो विश्राम पाने। रिफ्रेश होने। सात रोज भट्ठी में बैठ फिर आओ फिर दो तीन महीने बाद आओ रिफ्रेश होके कर जाओ तो अवस्था अच्छी रहेगी। अच्छा मीठे2 अब अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बापदादा का याद प्यार गुडनाईट। नमस्ते।

याद की यात्रा के अभ्यास बाद बेहद के बाप के बेहद में खड़े हुये अनमोल महावाक्य - बच्चे क्या कर रहे किस प्रकार का पुरुषार्थ कर रहे हो? वानप्रस्थ जाने का? सभी आत्मा अपने घर वापस जाना चाहते हैं? क्या याद है फिर जाना है? याद तो आती है कि शान्तिधाम जाना है? सुखधाम जाना है? इस दुनिया का सभी कुछ भूल जाना है? इस दुनिया से दिल तो नहीं लगता है? बच्चों को इतनी खुशी होती है? अथाह खुशी होती है? कैसे चलते फिरते जीवन्मुक्त बनेंगे? विश्व का मालिक बनेंगे? अर्थ समझते हो नियमानुसार धाम जाने का? बच्चे अपना आप देखते हैं? कानपूछते हैं? कौन सुनती है? बच्चों को शान्तिधाम और सुखधाम ही याद आता है? आप पहुंचेंगे।